[Social Issues and Environmental Problems,Vol.3 (Iss.9:SE): Sep, 2015] ISSN- 2350-0530(O) ISSN- 2394-3629(P)
Impact Factor: 2.035 (I2OR)
DOI: https://doi.org/10.29121/granthaalayah.v3.i9SE.2015.3210

INTERNATIONAL JOURNAL OF RESEARCH – GRANTHAALAYAH
A knowledge Repository

# प्राकृतिक संसाधन एवं उनका संरक्षण

**अनिता सिंह[1] रागिनी सिंह[2]**
[1]सहा. प्राध्यापक, गणित, माता जीजाबाई शासकीय स्ना. कन्या महाविद्यालय, इंदौर
[2]सहा. प्राध्यापक, भौतिकी, माता जीजाबाई शासकीय स्ना.कन्या महाविद्यालय, इंदौर

**सारांश**

प्रकृति ने मनुष्य को सभी जीवनोपयोगी संसाधन मुक्त हस्त से प्रदान किये हैं। आदिमानव अपनी समस्त आवश्यकताओं की पूर्ति के लिये पूरी तरह प्रकृति पर निर्भर करता था, किंतु आदि मानव से आधुनिक मनुष्य बनने की विकासयात्रा में मनुष्य ने प्राकृतिक संसाधनों का भरपूर दोहन किया फलस्वरूप प्रकृति की अकूत संपदा धीरे–धीरे समाप्त होने लगी। इस क्रम में विभिन्न प्रजातियाँ विलुप्त प्रजातियों की श्रेणी में पहुँच गयीं, शेष बची हुई प्रजातियों और स्वयं मनुष्य प्रजाति को बचाये रखने के लिये भी प्राकृतिक संसाधनों का संरक्षण अत्यावश्यक हो गया है। इस हेतु विभिन्न सुरक्षात्मक कदम उठाने के साथ–साथ आवश्यकता ऐसे युवाओं की है जो प्रकृति के प्रति संवेदनशील हों तथा विषम परिस्थितियों में भी प्रकृति के सानिध्य में रहकर प्राकृतिक संसाधनों के संरक्षण का उत्तरदायित्व निभाने में सक्षम हों।

मनुष्य आदिकाल से ही अपने अस्तित्व के लिये प्राकृतिक संसाधनों पर निर्भर रहा है। मानवीय विकास के प्रारंभिक समय में वह अपनी समस्त आवश्यकता की पूर्ति के लिये पूर्ण रूप से प्राकृतिक संसाधनों का ही उपयोग करता था। समय के साथ–साथ मनुष्य का विकास हुआ। विकास के इस क्रम में वह स्वयं तथा प्रकृति के बीच अंतर्संबंध को भूलता गया। बढ़ती हुई जनसंख्या तथा आधुनिकीकरण की अंधी दौड़ में वह प्राकृतिक संसाधनों का अंधाधुंध दोहन करने लगा। प्रकृति पर विजय पाने की इच्छा ने मनुष्य को स्वयं के ही विनाश की ओर ढकेल दिया। उसके कार्य कलापों ने अनेक सजीवों का अस्तित्व ही सदा के लिये समाप्त कर दिया। जनसंख्या वृद्धि तथा औद्योगिकीकरण ने न केवल प्राकृतिक संसाधनों को नष्ट किया बल्कि पर्यावरण को भी इस सीमा तक प्रदूषित कर दिया है कि स्वयं मानव जाति के लिये भी गंभीर समस्याऐं उत्पन्न हो गयी हैं। यदि मनुष्य इसी प्रकार प्राकृतिक संसाधनों का दोहन करता रहा तो उसकी स्वयं की प्रजाति का भी शनै–शनै विनाश हो जायेगा। स्वयं के अस्तित्व को बनाये रखने के लिये पर्यावरण तथा प्राकृतिक संसाधनों का संरक्षण अत्यावश्यक है।

प्राकृतिक संसाधन वह संसाधन है जो हमें प्रकृति द्वारा प्रदान किये जाते हैं तथा जो हमारी मूलभूत आवश्यकताओं की एक सीमा तक पूर्ति करने में समर्थ होते हैं।

जे. फिशर के अनुसार –''संसाधन ऐसी कोई भी वस्तु है जो मनुष्य की आवश्यकताओं एवं इच्छाओं की पूर्ति करता है।''

प्राकृतिक संसाधनों में मुख्यतः सूर्य का प्रकाश, वनस्पति, पशुधन, जल, वायु, भूमि, प्राकृतिक गैस, कोयला, पेट्रोलियम पदार्थ आदि सभी आते हैं। सामान्यतः वे सभी वस्तुऐं जो प्रकृति द्वारा मानव समाज को प्रदान की गयी हैं तथा जो मनुष्य की आवश्यकताओं को पूरा करने के साथ ही उसकी पहुंच में भी हों प्राकृतिक संसाधनों की श्रेणी में आती हैं।

प्राकृतिक संसाधनों में नवीनीकरणीय यथा सूर्य का प्रकाश, वायु उर्जा इत्यादि अर्थात् वे संसाधन जो मनुष्य द्वारा उपयोग करने पर भी समाप्त नहीं होते तथा अनवीनीकरणीय यथा प्राकृतिक गैस, कोयला, पेट्रोलियम आदि जो उपयोग करने पर क्रमशः समाप्त होते जाते हैं, दोनों ही प्रकार के संसाधन आते हैं।

वर्तमान में मनुष्य के द्वारा मुख्य रूप से संरक्षित किये जाने वाले प्रमुख संसाधन जल–संसाधन, भूमि–संसाधन, वायु–संसाधन, वन–संसाधन, उर्जा–संसाधन इत्यादि हैं।

शहरीकरण की दौड़ में हमने शहरों का अधिकांश हिस्सा सीमेन्टकृत कर दिया है, जिसके कारण पृथ्वी की वर्षा के जल को सोखने की क्षमता को अतुलनीय क्षति पहुँची है। पृथ्वी द्वारा वर्षा के जल को स्वयं में समाहित न कर पाने के कारण अधिकांश जल सड़कों पर बह कर व्यर्थ हो जाता है। इससे भूमिगत जल का स्तर दिन प्रति दिन नीचे जा रहा है। इसके अलावा आये दिन पृथ्वी के सीने में छेद कर ट्यूबवेल का निर्माण भी भूमिगत जलस्तर गिरने के लिये जिम्मेदार है। महानगरों की नालियों तथा सड़कों पर बहने वाली गंदगी, मलमूत्र, पॉलीथिन की थैलियाँ तथा अन्य रासायनिक पदार्थ आस–पास बहने वाले जल संसाधनों को प्रदूषित करने में अहम् भूमिका निभाते हैं।

वनों की अंधाधुंध कटाई के कारण मरूस्थलीय क्षेत्र लगातार बढ़ रहे हैं। वृक्षों की उपस्थिति मिट्टी के कटाव को रोकने का कार्य करती है। वृक्षों का न होना मिट्टी के कटाव का कारण बन रहा है। वर्षा के पानी के बहाव में बहती हुई मिट्टी उस क्षेत्र के बहुमूल्य खनिज पदार्थ तथा उर्वरकता को भी बहा ले जाती है।

शहरों में दौड़ते हुए अनगिनत वाहन लगातार वायुमंडल को प्रदूषित कर वायु–संसाधन के दूषित करने का कारण बन रहे हैं। कारखानों की चिमनियों से निकलता हुआ धुंआ भी लगातार वायुमंडल को प्रदूषित कर रहा है।

पेट्रोलियम पदार्थ, कोयला, प्राकृतिक गैस आदि के बढ़ते हुए उपयोग ने इन संसाधनों को समाप्ति की कगार पर पहुँचा दिया है। खनिज पदार्थों का बढ़ता हुआ दोहन न केवल इस संपदा की समाप्ति का कारण बन रहा है वरन् आस–पास मौजूद मूल्यवान वनस्पतियों की कटाई का कारण भी बन रहा है।

प्राकृतिक संसाधनों का हमारे जीवन में महत्वपूर्ण स्थान है। हमारी बढ़ती हुई आवश्यकताओं की पूर्ति इनके बिना संभव नहीं है, इनका विवेकपूर्ण उपयोग तथा संरक्षण आज समय की मांग है। अतः आवश्यक है कि हम प्राकृतिक संसाधनों के संरक्षण हेतु ठोस उपाय करे।

हमें प्राकृतिक संसाधनों के संरक्षण के लिये निम्नलिखित कदम उठाना चाहिये –

1. जल संसाधन के संरक्षण के लिये वर्षा के जल का उचित संग्रहण करना आवश्यक है। यह भूस्तरीय जल की स्थिति को सुधारने के लिए भी आवश्यक है।
2. नदी, तालाब, कुए आदि को हर प्रकार के प्रदूषण से मुक्त रखना चाहिये। इन्हें मल–मूत्र, गंदगी, रसायनिक पदार्थों या अन्य किसी भी प्रकार से प्रदूषित करने वालो के लिए कठोर दंड का प्रावधान होना चाहिये।
3. वनों की अंधाधुंध कटाई को रोकना चाहिये। वृक्षारोपण कार्यक्रम वृहद पैमाने पर चलाया जाना चाहिये तथा नये लगाये पौधों को पूर्ण सुरक्षा प्रदान करना चाहिये।
4. ढलवा भूमि पर मिट्टी के बहाव को रोकने के लिये अधिकाधिक वृक्ष लगाना चाहिये।
5. अधिक संख्या में वृक्षारोपण न केवल भू–संपदा का संरक्षण करेगा वरन् मूल्यवान क्षेत्रीय खनिजों को भी पानी के साथ बह जाने से रोकेगा।
6. वाहनों तथा कारखानों की चिमनियों से निकलने वाले धुंए से वायु– संसाधन को दूषित होने से बचाने के लिये कडे नियम बनाना चाहिये।
7. प्राकृतिक गैस, कोल तथा पेट्रोलियम पदार्थों को संरक्षित करने के लिये उर्जा के वैकल्पिक साधनों यथा जल–उर्जा, वायु–उर्जा तथा सौर–उर्जा का उपयोग करना चाहिए।
8. प्राकृतिक संसाधनों एवं पर्यावरण संरक्षण हेतु जनचेतना उत्पन्न करना चाहिये। इस क्षेत्र में ऐसे युवाओं को स्वयं पहल कर आगे आना चाहिये जो प्राकृतिक संसाधनों का संरक्षण अपनी नैतिक जिम्मेदारी मानते हैं तथा इस पुनीत कार्य हेतु अपना समय देने में समर्थ हैं।
9. उपरोक्त वर्णित उपायों के अलावा वैकल्पिक संसाधनों का उपयोग , बढ़ती हुई जनसंख्या पर रोक लगाना आदि ऐसे सुरक्षात्मक उपाय हैं जो प्राकृतिक संसाधनों पर मंडराते हुए विनाश के खतरों को कम करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकते हैं।

*संदर्भ*

*पर्यावरण अध्ययन –* *डॉ. एस.एम. सक्सेना तथा डॉ. (श्रीमती) सीमा मोहन*